दशम माला, खंड 21, अंक 37

सोमवार, 3 मई, 1993
13 वैशाख, 1915 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

छठा सत्र
(दसवीं लोक सभा)

(खंड 21 में अंक 31 से 40 तक है)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी । उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जावेगा ।]

विषय-सूची

बशम माला, खंड 21, छटा सत्र, 1993/1915 (शक)

अंक 37, सोमवार, 3 मई, 1993/13 वैशाख, 1915 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन संबंधी उल्लेख	1—7
श्री पी०वी० नरसिंह राव	1—2 और 6
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	2—3
श्री रवि राय	3—4
श्री सोमनाथ चटर्जी	4—5
श्री लोकनाथ चौधरी	5
श्री पी०जी० नारायणन	5—6
श्री शोभनाद्रीश्वर राव वाड्डे	6
अध्यक्ष द्वारा घोषणा	8

लोक सभा

सोमवार, 3 मई, 1993/13 वैशाख, 1915 (शक)

लोक सभा 11 बजे म० पू० पर समवेत हुई।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

11.00 म० पू०

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री पी० वी० नरसिंह राव) : अध्यक्ष महोदय श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री प्रेमदास की असमय और दुःखद मृत्यु पर हम हार्दिक शोक व्यक्त करते हैं। श्री प्रेमदास की क्रूर हत्या श्रीलंका के लिए और दक्षिण एशियाई देशों के बीच सम्बन्ध मजबूत करने के लिए उनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों पर एक गहरा आघात है। यह हम सब के लिए भी इस अर्थ में एक आघात है कि हम उनके साथ मिलकर काम कर रहे थे। मुझे विश्वास नहीं होता है कि मुश्किल से 15 दिनों के अन्दर ही वे हमसे बिछड़ गये क्योंकि दक्षेस सम्मेलन के अवसर पर ढाका में उनसे मेरी भेंट हुई थी और उसके बाद उन्होंने भारत में बिहार के अनेक बौध तीर्थों का दौरा किया था जिनमें उनकी गहरी रुचि थी।

महोदय, वे बहुत ही छोटे स्तर से उठकर अपने देश के मुख्य कार्यपालन के पद पर पहुंचे थे। हम सभी उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हैं। अपने देश की जातीय समस्या का समाधान ढूंढने के लिए राष्ट्रपति प्रेमदास ने अथक प्रयास किया। शांतिपूर्ण ढंग से इस मुद्दे का समाधान ढूंढने और अल्प संख्यक समुदाय की वैध आंकाक्षाओं की पूर्ति के उनके प्रयास में भारत ने उनकी सफलता की कामना की है।

मुझे श्री प्रेमदास से भेंट करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए। गत वर्ष उनके द्वारा हमारे देश के सरकारी दौरे और ढाका में सम्पन्न हुए विगत सातवें दक्षेस सम्मेलन के दौरान मैंने उनकी मित्रता और विवेकपूर्ण परामर्श का सम्मान किया। वर्ष 1981 से मेरा उनसे परिचय है। वास्तव में मैं 1980 में उनसे पहली बार मिला था जब वे संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन में भाग लेने आये थे और विदेश मंत्री की हैसियत से मैं वहां उपस्थित था।

तब से हमारे बीच व्यक्तिगत सम्बन्ध, घनिष्ठ व्यक्तिगत सम्बन्ध बना रहा और हमारे बीच किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं हुआ क्योंकि उनका रवैया गरीबी उन्मूलन इत्यादि का था जिसके बारे में मैं बाद मे बोलूंगा।

वे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। भारत के पवित्र तीर्थ स्थानों में गरीब तीर्थ यात्रियों के लिए आवास हेतु श्रीलंका की ओर से दान देकर उन्होंने बहुमूल्य योगदान दिया। अभी हाल ही में उन्होंने आवासीय परियोजना का उद्घाटन करने के लिए भारत का दौरा किया था।

दक्षेस के लिए राष्ट्रपति प्रेमदास की सेवायें विस्मरणीय रहेंगी। अभी हाल में वे इस क्षेत्रीय संगठन के अध्यक्ष थे तथा उन्होंने व्यापार के क्षेत्र में सहकारी प्रणाली को सुदृढ़ करने सामाजिक विकास तथा महिलाओं और बच्चों के कल्याण सम्बन्धी कार्यों के प्रति अपने को समर्पित किया हुआ था। दक्षिण एशियाई देशों में विद्यमान गरीबी को दूर करने के काम को वे प्राथमिकता देते थे और जब श्रीलंका ने दक्षेस की अध्यक्षता की तो इस समस्या का गहन अध्ययन किया गया और अनेक बहुमूल्य शिफारिशें प्रस्तुत की गईं।

महोदय, मुझे यहां इस बात का भी उल्लेख करना चाहिए कि बहुत वर्षों पश्चात प्रथम बार विगत वर्ष ही उन्होंने यह विचार प्रस्तुत किया था और इस मामले में इतनी सक्रियता दिखलाई कि इसकी रिपोर्ट एक वर्ष में ही तैयार हो गयी, सभी देशों के अनेक विशेषज्ञों को मिलाकर एक संगठन बनाया गया और हमने दक्षेस देशों से गरीबी उन्मूलन हेतु एक सारगर्भित और अच्छा कार्यक्रम तैयार किया गया और मैं आशा करता हूं कि हम इसे लागू कर पायेंगे। गरीबी उन्मूलन सम्बन्धी दक्षेस की रिपोर्ट दक्षेस देशों के लिए राष्ट्रपति प्रेमदास की ओर से दी गयी एक विरासत साबित होगी।

मुझे अनेक बार राष्ट्रपति प्रेमदास से भारत-श्रीलंका के परस्पर सम्बन्धों पर चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने उन्हें बहुत खुले दिमाग का व्यक्ति पाया। वे प्रस्तुत सुझावों के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे तथा द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए अपने रुख को सदैव बदलने के लिए इच्छुक रहते थे। वे एक यथार्थवादी और दृढ़संभाषी व्यक्ति थे और भारत-श्रीलंका के बीच समझौता मैत्री और सहयोग की भावना को मजबूत करने के अपने संयुक्त प्रयासों में मैं उनकी कमी हमेशा महसूस करूंगा।

अभी हाल में उन्होंने बोध गया स्थित समाधि पर एक सुनहरी छतरी चढ़ाई थी और उनका यह कार्य इस देश के प्रति उनकी मैत्री तथा बौद्ध धर्म में उनकी गहन आस्था का प्रतीक है।

उनकी मृत्यु का शोक प्रकट करने और उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करने के साथ-साथ मेरी कामना है कि कार्य साधक राष्ट्रपति अपने सद्प्रयासों में सफल हों और श्रीलंका की जनता को धीरज मिले और वे इस दुःख से शीघ्र उबर पायें तथा उस सुन्दर देश में शान्ति की स्थापना हो और समृद्धि में वृद्धि हो।

मैं एक बार फिर इस सरकार और अपने दल की ओर से उनके निधन पर शोक-संवेदना प्रकट करता हूं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, एक बार फिर हिंसा और हत्या की खूनी और घिनौनी राजनीति ने इस भूखण्ड से एक शिखर पुरुष को हमारे बीच में से असमय ही उठा लिया है। एक बार फिर अहिंसा का एक पुजारी, हिंसा की सर्वग्राही क्षुधा का शिकार हुआ है। इससे पहले यह हिंसा कोई नया निशाना ढूंढे, इस अंकुश का प्रयत्न होना चाहिए। जब मैं श्री प्रेमदास

जी से पहली बार मिला, वे प्रधान मंत्री थे सौम्य, शांत, संतुलित, मितभाषी और मिष्ठभाषी। उन्होंने यह अनुभव नहीं होने दिया कि मैं किसी प्रधान मंत्री के सामने बैठा हुआ हूं। वे अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ते थे। जैसा प्रधान मंत्री जी ने कहा, वे भारत के मित्र के रूप में याद किए जायेंगे। जिस क्षेत्र में संगठन को बलशाली बनाने में उनकी भूमिका उल्लेखनीय थी।

अध्यक्ष महोदय, श्री नाना साहेब गोरे भी हमारे बीच में नहीं रहे। वे महाराष्ट्र के एक सर्वमान्य नेता थे। स्वतंत्रता के संग्राम में, संयुक्त महाराष्ट्र के संघर्ष में संसद में प्रतिपक्ष के एक प्रबल प्रवक्ता के रूप में राष्ट्रीय राजनेता का एक रचनात्मक दिशा के प्रयास में श्री गोरे का योगदान महत्व-पूर्ण था। वे प्रतिबद्ध राजनेता थे। उनके लिए समाजवाद लोकप्रियता का सौपान नहीं था। वे एक नई व्यवस्था को लाने के लिए प्रयत्नशील थेऔर उसके लिए वे संघर्ष करते रहे। मुझे उनके साथ संसद में काम करने का मौका मिला था। वर्षों से उन्होंने राजनीति से अपने को दरकिनार कर लिया था, लेकिन उनकी सही सलाह और दिशा उपलब्ध होती थी। हम सब उनके निधन से बहुत दुःखी हैं। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से राष्ट्रपति प्रेमदास की जघन्य हत्या की निन्दा करता हूं, उनके निधन पर गहरा शोक प्रगट करता हूं। नाना साहेब गोरे को भी मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि देता हूं।

श्री रवि राय (केन्द्रपारा) : अध्यक्षजी, आज हमारे देश के लिए और श्रीलंका के लिए बहुत ही दुखदायक दिन है। इसलिए कि हमारे पड़ौसी और घनिष्ठतम् राष्ट्र श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री प्रेमदास जी हमारे बीच में नहीं रहे। अध्यक्षजी, प्रेमदास जी जिस तरीके की हिंसा के शिकार बने, मैं कहना चाहता हूं कि छठे सार्क सम्मेलन के वे मेजबान थे और वहां भूटान के महाराजा हमारे सार्क देशों में जिस तरीके से हिंसा और आतंकवाद का बोलबाला चला रहा था तो उनके मुंह से निकल गया था कि हिंसा और आतंकवाद इस क्षेत्र के लिए महाविपत्ति हैं। मैं नहीं जानता था कि उनके यह कहने के बाद हमारे दोस्त राष्ट्र के राष्ट्रपति प्रेमदास जी इसी आतंकवाद क्षेत्र के लिए महाविपत्ति के शिकार बनेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात प्रेमदास जी के जीवन की है, जैसे कहा जाता है।

[अनुवाद]

"दरिद्रता में पैदा होकर सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना।"

[हिन्दी]

श्रीलंका के इतिहास में सबसे गरीब घर में और दरिद्रता में पैदा होकर उनकी निष्ठा, आंत-रणता और मेहनत के नाते अपने राष्ट्र के सर्वोच्च स्थान पर पहुंच गये थे। उनके बारे में कहा जाता है कि यह सिर्फ मेहनत के जरिये, बुद्धिमत्ता के जरिये और नेतृत्व का जो गुण था, उसके जरिये राष्ट्रपति बने। उनके राष्ट्र में जिस तरीके से हिंसा का उदय हुआ था उसको खत्म करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनको हिंसा का शिकार होना पड़ा। असल में उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी जब हम लोग इस सार्क रीजन में जिसके वे नेता थे, आतंकवाद और हिंसा से जूझें और इस इलाके में एक अहिंसात्मक वातावरण तैयार करें, तो उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी। मैं जनता दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार और श्रीलंका की जनता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

हमारे नेता समाजवादी आंदोलन के चिन्तक और देश के राष्ट्रीय आंदोलन के जन-नेता गोरे जी आज हमारे बीच में नहीं हैं। गोरे जी सिर्फ राष्ट्र की आजादी के लिए और हिन्दुस्तान में एक समाजवादी समाज की स्थापना करने के लिए अन्त तक लड़ते रहे।

जब एक साल पहले पुणे में मेरी उनसे आखिरी मुलाकात हुई थी तो उनका यही कहना था कि हमारे संविधान में धर्मनिरपेक्षता और समाजवादी राष्ट्र में परिणित करने के लिए वर्णित किया गया है, उसके लिए अंत तक जूझे। उनकी अन्तिम इच्छा थी कि वे कोई राष्ट्रीय सम्मान न लें आपको पता ही है कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री द्वारा उनके परिवार को कहते हुए भी उनके लड़के ने मना कर दिया कि राष्ट्रीय सम्मान लेकर ही उनकी श्रद्धांजलि नहीं होगी। जिस तरीके से डा० राम मनोहर लोहिया और लोकनायक जयप्रकाश नारायण को साधारण ढंग से अन्तिम संस्कार किया गया, उसी प्रकार से इनका भी साधारण आदमी की तरह ही दाह-संस्कार किया गया।

मैं उनके लड़के से सारे हिन्दुस्तान के समाजवादी परिवार की तरफ से संवेदना प्रकट करता हूं और सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय, इस सम्माननीय सभा में जो कुछ कहा गया है उसमें मैं अपने दल की ओर से सम्मिलित हूं। दो दिन पहले घटी एक दुःखद घटना के कारण आज हम यहां मिल रहें हैं। हम इस महान एशियाई राजनीतिज्ञ के दुःखद निधन पर शोक व्यक्त करते हैं जिनकी जीवन लीला का दुःखद अन्त एक हत्यारे द्वारा कर दिया गया है।

राष्ट्रपति प्रेमदास ने सार्क देशों में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई थी। उन्होंने दक्षिण पूर्वी एशियायी देशों के बीच क्षेत्रीय सहयोग स्थापित करने के लिए अथक प्रयास किया और विभिन्न देशों के बीच सम्बन्धों को मधुर बनाने तथा इस क्षेत्र की गरीब जनता के आर्थिक उत्थान के प्रति उनका जीवन समर्पित था।

यह बड़ी चिंता का विषय है कि क्रूर आतंकवाद ने एक और नेता को अपना निशाना बना लिया और एक ऐसे व्यक्ति की हत्या कर दी जो अपने देश को विकास के पथ पर ले जा रहा था और इस क्षेत्र के देशों में परस्पर सहयोग स्थापित करने का प्रयास कर रहा था।

अब मुझे विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति और सभी दक्षेस देशों का यह कर्तव्य है कि वह उनके अधूरे काम को पूरा करे और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हम शोक की इस घड़ी में उनके परिवार के प्रति तथा श्रीलंका की जनता के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।

मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मैं श्री एन०जी० गोरे को जानता हूं जो एक महान स्वतन्त्रता सेनानी, एक सुविख्यात सांसद, शिक्षाविद् तथा राजनयिक थे। अपने जीवन के हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी पहचान छोड़ी है। उन्होंने न केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता के लिए बल्कि इस देश की जनता की आर्थिक मुक्ति के लिए भी सतत संघर्ष किया। श्री एन०जी० गोरे जैसे व्यक्ति अथवा नेता की क्षतिपूर्ति आसान नहीं है।

मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं।

मुझे विश्वास है कि उन्होंने जो मार्ग प्रशस्त किया है उस पर चलने से हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सहायता मिलेगी।

श्री लोकनाथ चौधरी (जगतसिंहपुर) : अध्यक्ष महोदय, श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री प्रेमदास की हत्या पर मैं अपने दल की ओर से इस सम्माननीय सभा में सभी के साथ और माननीय प्रधान मंत्री जी के साथ मिल कर गहरा दुःख और शोक प्रकट करता हूं।

श्री प्रेमदास दक्षेस देशों में सहयोग लाने का प्रयास कर रहे थे और साथ ही वे श्रीलंका से आतंकवाद का सफाया करने के मुद्दे पर भारत से सम्बद्ध थे। अतः उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदनायें व्यक्त करते हुए यह आवश्यक हो गया है कि हम दक्षिण पूर्व एशिया में होने वाली आतंकवादी एवं राजनैतिक हत्याओं के कारणों का पता लगाने का प्रयास करें। महोदय, अतः अपना दुःख व्यक्त करते हुए हमें यह शपथ लेनी चाहिए कि हम राजनीति में आतंकवाद और हिंसा के उन्मूलन के लिए संघर्ष करेंगे ताकि देश में नई प्रकार की स्थितियों का उदय हो और यही श्री प्रेमदास के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अतः उनके परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट करते हुए मैं अपनी क्षति भी महसूस करता हूं और मैं श्रीलंका की जनता, जिनका नेता उनसे दूर हो गया है के प्रति भी इस दुःख की घड़ी में अपनी सहानुभूति प्रकट करना चाहता हूं।

श्री गोरे इस देश में समाजवादी दल के नेता थे। अनेक अवसरों पर हमने उनके साथ मिल कर कार्य किया और संघर्ष में उनके साथ रहे। वे एक सच्चे राष्ट्र भक्त थे जिन्होंने महाराष्ट्र में भाषाई राज्य के निर्माण के लिए संघर्ष किया और भाषाई राज्य का निर्माण ही भारतीय संघात्मक ढांचे को मजबूत करने का आधार है जिसके लिए उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया और साथ ही साथ गरीब और शोषित लोगों के लिए भी संघर्ष किया। अन्य लोगों के साथ मैं भी उनके शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं यह भी महसूस करता हूं कि हमें उसी दृढ़ निश्चय और लगन से कार्य करना चाहिए जिस प्रकार श्री गोरे करते थे।

इन्हीं शब्दों के साथ पुनः मैं अपनी संवेदना तथा श्रीलंका की जनता के प्रति अपना और पूरे राष्ट्र की ओर से शोक प्रकट करता हूं और यह भी प्रतिज्ञा करता हूं कि हम दक्षिण-पूर्वी एशिया में आतंकवाद को समाप्त करके रहेंगे ताकि भविष्य में इस प्रकार के किसी राजनीतिक अथवा राज्य प्रमुख की हत्या न हो।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

श्री पी०जी० नारायणन (गोबिचेट्टिपालयम) : अध्यक्ष महोदय, श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री प्रेमदास की दुःखद हत्या न केवल श्रीलंका के लिए बल्कि पूरे दक्षिण पूर्व एशिया के लिए एक दुःखद घटना तथा अपूरणीय क्षति है। वह पागलपूर्ण हिंसा के शिकार हो गए जिसकी हमें घोर निन्दा करनी चाहिए। जब से वे श्रीलंका के राष्ट्रपति बने उन्होंने कड़ा रवैया अपनाया और उन्होंने भारत के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए ईमानदारी से प्रयास किया था। यह विश्वास ही नहीं होता कि दक्षेस का इतना कर्मठ नेता उन ताकतों द्वारा हमसे छीन लिया गया जिसकी बुनियादी मानव गरिमा में विश्वास करने वाले सभी व्यक्ति निन्दा करेंगे।

ए०आई०ए०डी०एम०के० दल की ओर से मैं श्रीलंका की जनता और उनके शोक संतप्त परिवार को अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं श्री गोरे के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं। महोदय मैं उनके शोक संतप्त परिवार को अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री शोभनाद्रीश्वर राव वाड्डे (विजयवाड़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी पार्टी तेलगूदेशम की ओर से श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री प्रेमदास की दुःखद मृत्यु पर अपनी गहरी संवेदना प्रकट करता हूं। वे भारत के अच्छे मित्र थे और हिंसा के शिकार हो गए। हम उन ताकतों की घोर निन्दा करते हैं जिन्होंने पहले इस देश के सपूत, हमारे प्रिय नेता श्री राजीव गांधी को छीन लिया और अब श्री प्रेमदास को। मैं सरकार से अपील करता हूं कि वह अन्य देशों के सहयोग से हिंसा की ताकतों को समाप्त करने के लिए सभी कदम उठाये।

महोदय, हम श्री एन०जी० गोरे की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं। वे एक महान समाजवादी नेता थे और अपने पूरे जीवनकाल के दौरान वे समाजवादी मूल्यों के प्रति कटिबद्ध रहे और उन्होंने अपना पूरा जीवन देश में समाजवादी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अर्पित कर दिया। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं और दूसरों के साथ मिल कर अपना शोक व्यक्त करता हूं।

श्री पी०वी० नरसिंह राव : अध्यक्ष महोदय, जब हम नाना साहेब गोरे को याद करते हैं, तो हम सबको और देश के हजारों राजनीतिक कार्यकर्ताओं को ऐसा महसूस होता है कि यह न केवल उनके परिवार की क्षति है बल्कि हम सबको व्यक्तिगत क्षति हुई है। उनके निधन से एक महान आन्दोलन को तथा देश को भारी नुकसान पहुंचा है। 1940 में जब से मैंने फरगुयूशन कॉलेज में दाखिला लिया था वह मेरे प्रति कृपा भाव रखते थे और मैं भी उनके बड़े प्रशंसकों में से एक था। 9 अगस्त 1992 समेत उन्होंने अनेकों बार हमें काम पर लगाया लेकिन उनके द्वारा कहे गये प्रत्येक शब्द ईमानदारी, लगनशीलता और देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत होते थे।

वह न केवल युवा वर्ग के लिये अपितु बड़े लोगों के लिए भी एक मिसाल थे। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वह एक महान स्वतन्त्रता सेनानी तथा समाजवादी आन्दोलन के प्रवर्तक होने के साथ-साथ गोवा के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने तथा श्रमिक नेता भी थे। जीवन का कोई भी क्षेत्र उनके द्वारा अछूता नहीं रहा जहां उन्होंने अपना अमिट प्रभाव न छोड़ा हो, विशेषकर निर्धनता उन्मूलन तथा समानता के क्षेत्र में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा।

महोदय, आज हमें उनकी कमी बहुत खल रही है। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार तथा अन्य उन सभी लोगों के प्रति, जिन्होंने एक महान नेता, एक महान मित्र को खो दिया है, गहरा शोक प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, माननीय प्रधान मंत्री तथा अन्य नेताओं द्वारा प्रकट किए गए उद्गारों में मैं भी शरीक हूं। सदन को श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री रणसिंघे प्रेमदास के दुःखद निधन की सूचना शनिवार 1 मई, 1993 को प्राप्त हुई। जिस निर्ममता से उनकी हत्या की गई वह न केवल दुःखद है अपितु समूचे सभ्य समाज पर कलंक है। हिंसा की ऐसी कार्यवाहियों से इस उप महाद्वीप में तथा विश्व में शांति और सौहार्दता कायम करने के प्रयासों को गहरी ठेस पहुंचती है।

राष्ट्रपति श्री जे०आर० जयवर्द्धने के शासनकाल में श्री प्रेमदास दो बार प्रधान मंत्री के रूप में कार्य करने के पश्चात् दिसम्बर, 1988 में राष्ट्रपति चुने गए और जनवरी, 1989 में उन्हें द्वितीय कार्यपालक राष्ट्रपति के रूप में शपथ दिलाई गयी थी।

68 वर्षीय राष्ट्रपति प्रेमदास ने अपने लम्बे और विशिष्ट कार्यकाल के दौरान श्रीलंका, दक्षिण एशिया तथा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की जो सेवा की है उसे सदा याद रखा जायेगा।

हम देश के भीतर तथा सीमा पर आतंकवाद की कड़ी निन्दा करते हैं।

हम राष्ट्रपति प्रेमदास के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हैं तथा इस दुःख की घड़ी में श्रीलंका के लोगों के साथ हैं।

श्री एन०जी० गोरे 1957-62 के दौरान पूर्व बम्बई राज्य के पूना निर्वाचन क्षेत्र से दूसरी लोक सभा के सदस्य थे। वे पूना के मेयर भी रहे। वे राज्य सभा के सदस्य भी रहे।

श्री गोरे एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, स्वतन्त्रता सेनानी, विशिष्ट लेखक, धर्मनिरपेक्ष तथा राजनयिक थे।

1930, 1932 और 1942 में स्वतन्त्रता आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया और इस कारण उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत उन्होंने 1955 में गोवा मुक्ति संघर्ष में सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व किया तथा उन्हें पुर्तगाल की सैनिक अदालत द्वारा कड़े कारावास का दण्ड दिया गया।

उन्होंने साम्प्रदायिक वैमनस्य को मिटाने के लिए जेहाद छेड़ा तथा साम्प्रदायिक सद्भाव बनाने के लिए भरसक प्रयत्न किया।

वे एक दूरद्रष्टा और वैज्ञानिक सोच रखने वाले व्यक्ति थे। मार्क्सवाद, बुद्ध और गांधी दर्शन के आधार पर अहिंसा और समानता के मूल्यों हेतु उन्होंने जीवन पर्यन्त संघर्ष किया।

उन्होंने मराठी में कई किताबें लिखीं। उन्होंने श्री जवाहर लाल नेहरू की आत्मकथा का अनुवाद भी किया।

वह ब्रिटेन के उपायुक्त भी रहे।

86 वर्ष की आयु में 1 मई 1993 को उनका निधन पूना में हुआ।

मुझे विश्वास है कि सभा मेरे साथ मिल कर श्रीमती प्रेमदास तथा स्वर्गीय राष्ट्रपति के शोक संतप्त परिवार के अन्य सदस्यों, श्रीलंका की सरकार तथा श्रीलंका के मित्रों के प्रति उनकी मृत्यु पर गहरी संवेदना प्रकट करती है। हमारे सहयोगी श्री गोरे के परिवार के शोक संतप्त सदस्यों के प्रति भी हम अपनी संवेदना प्रकट करते हैं।

दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजली अर्पित करने हेतु अब यह सभा थोड़ी देर मौन खड़ी रहेगी।

11.30 म०पू०

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

11.30 म०पू०

अध्यक्ष द्वारा घोषणा

अध्यक्ष महोदय : आज सभा स्थगित करने से पूर्व मैं सभा को यह सूचित करना चाहूंगा कि आज के लिए सूचीबद्ध कार्य को मौजूदा प्रथानुसार कल निपटाया जायेगा और माननीय कृषि मंत्री अपने मंत्रालय की अनुदानों की मांगों पर चर्चा का उत्तर 5 म०प० पर देंगे तथा शेष सभी मांगों के संबंध में गिलोटिन 6 म०प० पर किया जाएगा और तब हम विनियोग विधेयक तथा वित्त विधेयक संबंधी मुद्दे उठायेंगे और इसके लिए देर रात तक बैठेगें ।

अब सभा मंगलवार, 4 मई, 1993 के 11.00 म०पू० पर पुनः सममेत होने के लिए स्थगित होती है ।

11.33 म०पू०

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 4 मई, 1993/14 वैशाख, 1915 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई ।

मुद्रक : चौहान प्रिन्टिंग प्रेस, ब्रह्मपुरी, दिल्ली-53